5 P
170
G
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1540

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 170

891.431
An 42

1711

अंगरेजों का फोड़ा

अपने प्रण से वीर न टलते।
लालच से वे कभी न हिलते॥
भारत का निश्चय कल्याण।
होगा जब देंगे हम प्राण॥

भारत पुस्तक भंडार

अंधेर देव जबलपूर

दूसरी बार ५००० } १५ मार्च १९२२ { एक पैसा

अंगरेजों का फोदा।

(असहयोगी और अंगरेजकी बात चीत)

असहयोगी –

गांधीजीने करी लड़ाई।

खोल खोलकर पोल सुनाई॥

नहीं ठिकाना है अब भाई।

अंगरेजों का फोदा है॥

अंगरेज –

गांधी क्या कर सके अकेला।

पकड़ जेल में उसे ढकेला॥

हमने पकड़े शौकत किचलू।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY OF INDIA No 170 Date 2-12-71

लो तुमकोभी पकड़ूं कुचलूं ॥
हम अंगरेजी जोधा हैं।

अलहयोगी -

तुमने खा खा माल हमारा।
किया हिन्द को साफ करारा ॥
फिर बनते अंगरेजी जोद्धा।
अंगरेज का है यह फोदा ॥

अंगरेज -

चुप हो आओ देंगे पैसा।
तुम्हें बनादें साहब ऐसा ॥
बना ठाट घूमो हम जैसा।
केवल करो कहैं हम वैसा ॥
क्या ही उमदा सौदा है ॥

अलहयोगी -

तुमने हमें बनाया कूकर।
टुकड़ा डाल भगाया छू कर ॥
फिर कहते हो उमदा सौदा।

अंगरेजों का है यह फोदा॥
कहूँ बात हम तुमको हितकर ॥ ५ ॥
लुटिया बाँध भगो अपने घर ॥
नहीं चलेंगी अब ये बातें ।
पल्ले बाँध रखो ये घातें ॥
नहीं खबर क्या गोरा रंग ।
हुआ बहुत दिन से बदरंग ॥
अंगरेज...
सीधी उँगली घी न निकलता ।
सीधे पन से काम न चलता॥
साहब तुम्हें बनाते हैं हम ।
तौभी नहीं मानते हो तुम ॥
काला अदमी, हो चलाक ।
तुम हरदर जूते के लाक ॥
ठहर तुझे मैं मजा चखाता ।
जीते जी जमलोक दिखाता ॥
असहयोगी ...
अपने प्रण से वीर न हिलते ।

लालच से वे कभी न मिलते॥
नहीं मृत्यु भी दहला सक्ती।
कर सक्ती क्या तुमरी सक्ती॥
आशा का निश्चय कल्याण।
होगा जब हम देंगे प्राण॥
नहीं याद क्या पिछली बातें।
चूमी जब मुगलों की लातें॥
आपस में कर दिया बिगाड़।
लूटा हमें फोड़ यों फाड़॥
दिखा हमें यह लोभ हमेशा।
बन्धु हमारे पीस हमेशा॥
देख रहे थे सुख के सपने।
यों धन लगे बाप का अपने॥
नहीं चलेंगी अब ये बातें।
पल्ले बाँध रखो ये घातें॥

शिवाजी-(स्वर्ग से)

पाँव न पीछे धरहु करहु घमसान खेत महँ।
प्राण देश हित देहु लेहु यश विमल जाहु जहँ॥

सम्मुख होके लड़ो पीठ नहिं कभी दिखाओ।
मिला आज है समय मातृ ऋण शीघ्र चुकाओ॥

गाँधी—

शत शत बाधा विघ्नों से भी वीर हृदय कब
रुकता है।
नीच नरों के सन्मुख आर्य वीर मस्तक क
ब झुकता है॥
अहिंसात्मक असहयोग ही दाँत करे इनके
खट्टे।
खुलें शीघ्र ही आँखें इनकी बंधे हुए जिनमें पट्टे॥

देवगण-

जिस पर अत्याचार किए अति घृणित गए हैं।
घोर तीव्र अन्याय अनेकों नित्य सहे हैं॥
सह सह अत्याचार आदि में वह कितने ही।
भोगेगा सुख भोग अंतमें वह उतने ही॥
उसके दुख कण्टक वे फट छूट जावेंगे सभी।
सुख के प्यारे सुदिन भी जल्दी आवें तभी॥

अंगरेज-(मनमें)

पोल खुली सारी न कपट मेरा चलता है।

बिना हिन्द के किन्तु न भोजन भी मिलता है ॥
प्रभु यीशु खीष्ट करू कथा बडा प्रश्न सनमुख है ।
हिन्द छोड़ने से सुख छूटे फल हातों में दुख है ॥
बमबाजी का केवल है अब एक सहारा ।
रहे हमारे पुरुषा सच मुच चतुर अपारा ॥
छीन लिए हथियार जिन्हों ने इनसे सारे ।
आती आपद घोर नहीं तो इन के मारे ॥
तभी बने हम आज इन्होंके सनमुख भारी जोधा ।
है सचमुच प. भीरु बोलता हृदय हमारा फोदा ॥

छे सौ पृष्ठ

वाला अपूर्वपोथा हम आपको केवल ३) में देते हैं . नमूने के लिये आज आप छैआने केटिकिट भेजिये और छात्रसहोदर मगाइये .

देखिये—

असहयोगी वीणा =) पंजाबका खून ।)
देशी माला ॥) स्वराज्य काशंख –)

पता- छात्र-सहोदर जबलपूर

क्या आप गुलाम हैं !

यदि हां तो क्यों स्वतंत्रव्यापार करिये और पैसा कमाइये .. इसके लिये आप हमारी—

१ हितकारक

पढ़िये .. इसमें दमड़ी की चीजों से सैकड़ों कमाने की अनेक विधियाँ दी हैं तिसपर भीमूल्य =)

आर्थिक सफलता

यह ईमानदारी से पैदा करने दूसरी सीढी हैं। पुस्तक में लगभग १०० पृष्ठ हैं। छपाई बम्बई की तिस पर भीमूल्य ।=)

महात्माओं से

गांधीबाबा के ५१ व्याख्यान १।=)

भारत को स्वधीनता का संदेश १।) स्वदेशी औ स्वराज्य ।=) स्वतंत्रता का दावा=) पंजाब का खून ।) सी. आर .. दास =) १)से कम पुस्तकोंकी वी. पी. नहीं भेजी जाती।

पता फूल चंद जैन होस्टल जबलपुर